REIKI –THIRD DEGREE
BY
SHANKER PURSWANI
Mobile- 094148-50943

MASTER/TEACHER MANUAL

विषय सूची

1.सुस्वागतम्

मेरे प्रिय आत्मन्

आप सभी के हृदय में बैठे परमात्मा को नमन्। आप सभी का रेकी के मास्टर/टीचर लेवल में स्वागत है। आज आप जिस लक्ष्य को लेकर यात्रा पर निकलें हैं उसकी ओर और करीब आ गए हैं। अभी यात्रा पूर्ण नहीं हुई है। बहुत बार ऐसा लगेगा कि जो जानना था जान लिया और यात्रा समाप्त हो गई लेकिन इस गलतफहमी में नहीं रहना। यात्रा को आरंभ करना तुम्हारे हाथ में था किन्तु समाप्त तो सिर्फ परमात्मा ही करता है। परमात्मा उन्हीं की यात्रा समाप्त करता है जो अपने मूल स्वभाव में आ जाते हैं। तो तुम्हारा मूल स्वभाव क्या है? तुम्हारा मूल स्वभाव ,सबका मूल स्वभाव एक ही है और वो है परमात्मा।

इसे शब्दों के माध्यम से नहीं समझाया जा सकता । यह अज्ञेय है इसके बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता है। यह एक अनुभव है, एक एहसास है। यह अनुभव कैसे हो इसकी तरफ केवल ईशारे ही किये जा सकतें हैं। एक सीमा तक ही मार्गदर्शन किया जा सकता है। आगे की यात्रा स्वयं करनी होती है कोई पद चिन्ह नहीं है कि तुम उस पर चलकर पहुंच ही जाओगे। कोई संगी नहीं,साथी नहीं अकेले ही चलना है तभी तो बुद्ध ने कहा है अप्प दीपो भव। तुम्हें अपना दीपक स्वयं बनना होगा। तुम इस मार्ग पर कितना चले? क्या तुमने पाया ? यह तुम नहीं बोलोगे तुम्हारे कर्म, तुम्हारा आचरण बोलेगा। मार्ग कठिन जरुर है नामुमकिन नहीं कारण कि तुमसे पूर्व कई लोग इस यात्रा पर निकले हैं और कईयों की यात्रा पूर्ण भी हुई है इसलिए संशय का कोई सवाल ही नहीं है। यदि एक ने भी पाया है तो दूसरा न पा सके ऐसा संभव ही नहीं। इसलिए लक्ष्य को हर हाल में पाना है–

आओ मिलकर इसे दिल की गहराईयों से इसे गायें।

तुम्हारा वास्तविक लक्ष्य है स्वयं को जानना,अपने अविनाशी स्वरूप को पहचानना कि तुम वो नहीं हो जो अभी स्वयं को मान रहे हो। जिसे तुम मैं समझ रहे हो उसे तो हजारों बार बदल चुके हो। वास्तव में तुम शिव हो,सत्य हो,सुंदर हो,अजन्मा हो,अमर हो।

सत्यम्–शिवम्–सुंदरम्
लक्ष्य को हर हाल में पाना है।

हाँ यही रस्ता है तेरा, तूने अब जाना है,
हाँ यही सपना है तेरा, तूने पहचाना है।
हाँ यही रस्ता है तेरा, तूने अब जाना है,
हाँ यही सपना है तेरा, तूने पहचाना है।

तुझे अब ये दिखाना है,
रोकें तुझको आंधियां ,जमीन और आसमां,
पाएगा जो लक्ष्य है तेरा, लक्ष्य को हर हाल में पाना है।

मुश्किल कोई आ जाए तो, परबत कोई टकराए तो,
ताकत कोई दिखलाए तो, तूफां कोई मंडराए तो,
मुश्किल कोई आ जाए तो, परबत कोई टकराए तो,
बरसे चाहे अंबर से आग, लिपटे चाहे पैरों से नाग,
बरसे चाहे अंबर से आग, लिपटे चाहे पैरों से नाग,
पाएगा जो लक्ष्य है तेरा, लक्ष्य को हर हाल में पाना है।

हिम्मत से जो कोई चले,घरती हिले कदमों तले,
क्या दूरियां क्या फासले,मंझिल लगे आकर गले,
हिम्मत से जो कोई चले,घरती हिले कदमों तले,
तू चल यूं ही अब सुबह शाम,रुकना झुकना नहीं तेरा काम,
तू चल यूं ही अब सुबह शाम,रुकना झुकना नहीं तेरा काम,
पाएगा जो लक्ष्य है तेरा, लक्ष्य को हर हाल में पाना है।

हाँ यही रस्ता है तेरा, तूने अब जाना है,
हाँ यही सपना है तेरा, तूने पहचाना है।
लक्ष्य को हर हाल में पाना है।

2.रेकी – तृतीय(मास्टर/ शिक्षक स्तर)

रेकी मास्टर के इस कोर्स को लेकर आगे चलें उससे पहले यह जान लें कि इस केन्द्र पर सिखाये जाने वाले एवं अन्य केन्द्रों में क्या अंतर है। मैं स्वयं आध्यात्म के पथ पर चल रहा हूँ। रेकी से मेरा परिचय स्पर्श चिकित्सा कहकर करवाया गया था। मुझे बचपन से ही तंत्र एवं आध्यात्मिक साहित्य पढ़ने में रुचि थी जो आज भी बरकरार है। अभी तक साहित्य पढ़ना एवं ऐसा महसूस करना कि अभी कुछ बाकि है जो अभी तक नहीं जाना है मुझसे यही कहता है कि अभी यात्रा पूर्ण नहीं हुई है, मंझिल अभी दूर है। अतः रेकी के तीनों स्तर कर लेने के बाद एवं सैंकड़ो लोगों को रेकी से जोड़ने के बाद भी मेरी आत्मा मुझसे स्वयं को रेकी मास्टर मानने का साहस नहीं करने देती, ग्रांड मास्टर तो बहुत दूर की बात है। इसलिये मैं स्वयं को रेकी का अनुयायी,डा.उसुई का शिष्य कहलाना पसंद करता हूं। वैसे भी रेकी का ग्रांड मास्टर कहलाने का अधिकार सिर्फ औह सिर्फ डा. मिकाओ उसुई को ही है। वास्तव में रेकी में ग्रांड मास्टर नाम का कोई स्तर है ही नहीं। रेकी में केवल तीन ही स्तर हैं प्रथम, द्वितीय और तृतीय बाकि सब दुकानें हैं जिनका एक ही उद्देश्य है पैसा कमाना।

पैसा देकर कोई भी रेकी मास्टर बन सकता है लेकिन उससे आपको सिर्फ रेकी के एटयूनमेंट कैसे किए जाएं इसकी जानकारी ही मिलती है, रेकी की सच्ची एवं गहरी समझ नहीं। बेशक आप पैसे बहुत कमा सकते हैं लेकिन अंदरुनी संतुष्टी कभी नहीं मिल सकती। इसके लिए तो कठोर परिश्रम करना होगा,रेकी के सिद्धांतो पर चलना होगा। बिना करुणा के एक कदम भी चलना असंभव होगा। यह सब आपको कोई गुरु कोई रेकी शिक्षक नहीं दे सकता इसे तो आपको स्वयं अर्जित करना होगा। तो मेरा एक ही उद्देश्य है कि आपको सत्य से अवगत करवा दूं कि रेकी –3 के बाद स्वयं को रेकी मास्टर समझने की भूल मत कर लेना क्योंकि असली यात्रा तो अब आरंभ होगी। किसी के साथ चलना किसी के निर्देशन में कार्य करना बड़ा ही सरल होता है । जब सारी जिम्मेदारी उठाकर स्वयं आगे बढ़ते हैं तो ही अपनी वास्तविकता का ज्ञान होता है। अब आप स्वयं अपने गुरु होते है। सच्चा गुरु वही होता है जो गुरु बना दे शिष्य से कुछ भी नहीं छिपाये । मैं भी रेकी का संपूर्ण ज्ञान जो मेरे पास है वो मै

आपको दे देना चाहता हूं। आगे की यात्रा तो स्वयं आपको ही करनी होगी। रेकी का सबसे बड़ा रहस्य है कि आप रेकी को बिना गुरु से शक्तिपात लिए भी सीख सकते हैं इसमें आपको सफलता कब मिलेगी यह तो रेकी के सिवाय कोई नहीं जानता। किन्तु डा. उसुई की शिष्य परंपरा से किसी भी रेकी शिक्षक जिसने उसुई परंपरा के शिष्य से शक्तिपात प्राप्त किया हो से बड़ी सरलता से रेकी सीख सकते हैं। शक्तिपात ग्रहण करने एवं रेकी स्तोत्र से जुड़ जाने के बाद **रेकी का सबसे बड़ा रहस्य सह है कि रेकी आपके संकल्प से कार्य करती है।** अर्थात जहाँ आपका मन होगा रेकी वहीं जाएगी। ताओ का एक नियम है कि मन का अनुगमन ची(रेकी,प्राण शक्ति) करती है और ची का अनुगमन रक्त करता है।

अतः यह बहुत जरुरी है कि आप अपने मन पर नियंत्रण करना सीखें। इसके लिए रोज आपको घ्यान एवं सजगता की साधना करनी होगी।

रेकी को कभी प्रसिद्धि पाने का साधन नहीं बनाना। किसी भी व्यक्ति को फिर चाहे वह आपका अपना प्रिय ही क्यों न हो बिना उसकी रुचि के उसे रेकी नहीं सिखायें। रेकी को सस्ता कभी मत बनाना कारण कि लोगों की मानसिकता है कि सस्ता माल अच्छा नहीं होता और सहज ही प्राप्त वस्तु यां ज्ञान की कोई कद्र नहीं करता। विद्यालय में बच्चे पढ़ते नहीं किन्तु उसी शिक्षक से ट्यूशन पर बच्चे पढ़ लेते हैं। ज्यादा रेकी चैनल बनाकर भीड़ बढ़ाने से रेकी का श्ला नहीं होने वाला इससे तो अच्छा होगा कि कम रेकी चैनल बाएं लेकिन अच्छे,गुणी एवं समर्पित चैनल बनाएं । जिनमें रेकी की प्यास हो जो अपनी आघ्यात्मिक उन्न्ती करना चाहते हों। जिनका नाम लेने पर गुरु का मन खुश हो जाए। प्राचीन काल में व्यक्ति अपना परिचय देते वक्त अपने कुल का नाम नहीं लेकर अपने गुरु का नाम लेते थे कि हम अमुक गुरु के शिष्य हैं। अतः आपसे निवेदन है कि ऐसा कोई भी कार्य न करें कि केन्द्र एवं आपके शिक्षक का नाम खराब हो। रेकी का मूल लक्ष्य है स्वयं को जानना इसके अलावा रेकी आपकी

भौतिक ईच्छाएं भी पूरी कर सकती है। रेकी में अनंत संभावनायें हैं किन्तु इतिहास साक्षी है कि मानव जब–जब भौतिकता के पीछे भागा है उसने अपना स्वयं का ही विनाश किया है। क्षण भर को उसे जरुर लगता है कि उसने महान् कार्य किया है किन्तु अंततः उसे पछताना ही पड़ा है। अब इसका निर्णय आपको लेना है कि आपको किस मार्ग पर चलना है प्रेय मार्ग यां फिर श्रेय मार्ग पर। श्रेय मार्ग बहुत कठिन होगा,संघर्ष करना होगा। पग–पग पर परीक्षाएं होंगी ,आग में तपना होगा तभी तो मनचाहा आकार मिलेगा। मोक्ष रुपी ,परम् आनंद चाहिये तो यह सब तो करना ही होगा। आईये रेकी–3 को समझे और इसे अपने अंदर उतारें।

3.मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा

मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा दोनों ही योग की बहुत शक्तिशाली क्रियाएं हैं। ये ऊर्जा के अधोगमन को रोकती हैं एवं उर्ध्वगमन में सहायक होती है। रेकी में इनका उपयोग शक्तिपात करने के दौरान किया जाता है। शक्तिपात के दौरान रेकी की सर्वोच्च शक्ति का आहवाहन एवं स्यवं में धारण करना होता है। इस समय यह जरुरी हो जाता है कि जिस उच्चतम रेकी को शिक्षक ने अपने अंदर धारण किया है वह धरती में न चली जाए, इस हेतु से शिक्षक को मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा दोनों को एक साथ करना होता है ताकि रेकी विद्यार्थी में शक्तिपात देते समय सर्वोच्च रेकी दी जा सके। अतः इन दोनों ही क्रियाओं में रेकी शिक्षक का सिद्धहस्त होना जरुरी है। इन दोनों ही क्रियाओं का आघ्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

मूलबंध

योग की यह अति महत्वपूर्ण क्रिया है यह तो आपको बता दिया गया है। इसे करने की विधि इस प्रकार है :–

विधिः–

1.किसी कुर्सी पर बैठ जाएं। रीढ़,गर्दन एवं सिर तीनों ही एक सीध में हों। आंखे बंद करके एक गहरी सांस ले एवं उसे अंदर ही रोक दें। अब अपनी गुदा(दने) एवं उसके आस पास की मांसपेशीयों को ऊपर की ओर संकुचित करके रोकना है। जितनी देर सांस अंदर लेकर इसे सहजता से कर सकें करें। सांस छोड़ते समय इसे भी ढीला छोड़ दें। इसमे सांस लेना यां छोड़ना महत्वपूर्ण नहीं है। मत्वपूर्ण है गुदा एवं आस पास की मासपेशियों का संकुचन,आपको कम से कम 5 मिनट तक इसे संकुचित करने की क्षमता विकसित करनी होगी। इससे आपका मूलाधार चक्र विकसित होगा,मूत्र संस्थान से संबधित रोगों में भी लाभ मिलेगा।

खेचरी मुद्रा

इस मुद्रा से योगीजन सहस्त्रसार से टपकने वाले अमृत कापान करते थे। हठयोग की विधि अनुसार इसे आज के युग में करना लगभग अंसभव ही है। किन्तु राजयोग की विधि सहज है इससे रेकी का मकसद हल होजाता है। इसकी राजयोग की विधि इस प्रकार हैः–

इसको करने के लिए अपनी जीभ को उलट कर तालु से स्पर्श करना होता है एवं कम से कम 3 मिनट तक इसे लगाए रखने की क्षमता विकसित करनी होगी।

4.वॉयलेट ब्रीथ

रेकी का शक्तिपात करने से पहले आपको रेकी की कुछ उन्नत क्रियाओं में दक्षता हासिल करनी होगी। वॉयलेट ब्रीदिंग उनमें से पहली है, दूसरी मूलबंध एवं तीसरी खेचरी मुद्रा है। आईये पहले वॉयलेट ब्रीथ का अभ्यास करेंः–

1.रेकी की आभार विधि कर रेकी चैनल करें।

2.मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा लगाएं।

3.आँखे बंद करके एक लंबी गहरी सांस लें।सांस को अंदर ही रोकते हुए कल्पना करें की यह सांस मूलाधार चक्र में पहुंच गई है और वहां पर घूम रही है। घूमते – घूमते यह रीढ़ में मूलाधार से सहस्त्रसार की तरफ बढ़ रही है। जब यह सहस्त्रसार की ओर बढ़ रही हो तो ऐसी भावनाकरें कि यह सफेद धुंध में परीवर्तित हो गई है। सहस्त्रसार में इस सफेद घुंध को घूमते हुए देखें।

4.सहस्त्रसार में घूमते –घूमते यह बैंगनी रंग के प्रकाश में बदल गई है और दिव्य रोशनी की तरह चमक रही है। इस चमकती हुई रोशनी में रेकी के मस्टर सिंबल को चमकते हुए देखना है।

5.बैंगनी चमकते हुए प्रकाश में चमकते हुए मस्टर सिंबल को आज्ञा चक्र में आतें हुए देखें।

6.अब सांस को मुँह से छोड़ना है सांस को छोड़ते हुए यह भाव करना है कि जैसे ही आप सांस छोड़ रहे हैं तो आपके आज्ञा चक्र से बैंगनी प्रकाश एवं मास्टर सिंबल भी बाहर निकल कर विद्यार्थी के सहस्त्रसार में प्रवेश कर गया है एवं मस्तिष्क के पश्च भाग मे जाकर स्थायी हो गया है।

5.मास्टर सिंबोल

रेकी का तीसरा एवं अंतिम सिंबोल है **डाइ को मियो** इसका अर्थ दिव्य प्रकाश स्तम्भ यां प्रकाश का सर्वोच्च स्तोत्र। इसका उपयोग रेकी शक्तिपात, साइकिक सर्जरी एवं रेकी ध्यान चारों सिबल के साथ किया जाता है।

डाइ को मियो

DAI- KO-MYO

तिब्बतीयन डाइ को मियो

उसुई मास्टर सिंबल

डाइ को मियो

1.डाइ को मियो का उपयोग आत्मिक विकास के लिए।
2.अंतप्रर्ज्ञा विकसित करने के लिए।
3.अनिश्चय एवं मतिभ्रम को दूर कर स्पष्ट मार्ग दिखाता है।
4.सहस्त्रसार को सक्रिय करने के लिए।
5.ऑरा के विस्तार के लिए।
6.सभी चक्रों के ब्लॉकेज को दूर करने के लिए।
7.सुरक्षा कवच बनाने के लिए।

फायर सर्पेंट

1.मेरुदंड(स्पाइन) संबधित रोगों के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।
2.आज्ञा चक्र से मूलाधार चक्र के ब्लॉकेज हटाने हेतु ।

फायर सर्पेन्ट

2. RAKU The Fire Serpent Symbol
Pronounced: ray – koo
Abbreviation: it's already short enough!
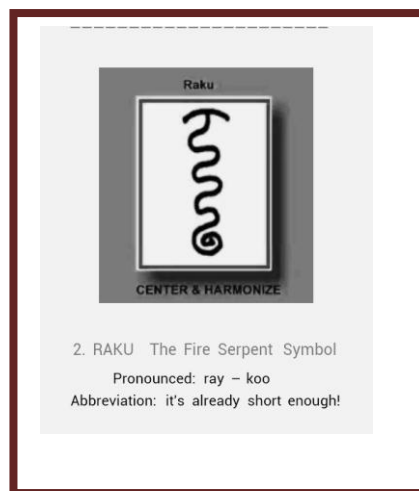
राकू

राकू की आकृति कड़कती बिजली के समान है। इसका कार्य भी वैसा ही है। शक्तिपात के दौरान इसे सबसे अंत में प्रयोग किया जाता है।

राकू

उसुई की पारंपरिक रेकी में सिर्फ चार ही सिंबल हैं

चो कु रे ,होन शा जे शो नेन ,से हे की एवं उसुई मास्टर सिंबल डाइ को मियो। पारंपरिक शक्तिपात प्रक्रिया में इन्हीं चार सिंबल का प्रयोग किया जाता है। फायर सर्पेंट ,राकू ,तिब्बतियन डाइ को मियो को पश्चिम के रेकी मास्टर ने जोड़ा है। मूल जापानी उसुई रेकी से इनका कोई संबध नहीं है। मूलतः डा. उसुई शक्तिपात के दौरान किसी भी सिंबल का उपयोग नहीं करते थे। वे शुद्ध प्राचीन शरतीय पद्धती के अनुसार दीक्षा देते थे। इसमें सिंबल बाद में उसुई के शिष्यों ने जोड़े हैं। हां इतना जरुर है कि इन सिंबल के नामों का मंत्र की शँती जप दीक्षा के समय एवं उपचार करते समय करते थे। यहाँ यह सब बताने का एक ही कारण है कि मैनें आपसे कहा था कि जो कुछ भी रेकी से संबधित ज्ञान मुझे मिला है वो सारा का सारा आपके साथ बाटूंगा। अतः शक्तिपात की उसुई एवं गैर उसुई दोनों प्रणालियों का ज्ञान आपको दिया जाएगा।

प्रणाली चाहे कोई भी हो सबमें महत्वपूर्ण है रेकी शिक्षक की संकल्पित भावनाएवं शिष्य के ग्रहण करने की भावनाएवं श्रद्धा। यदि इन दोनों का अभाव होगा तो चाहे कितने ही शक्तिपात करवा लें कुछ भी नहीं होना है।

<u>सबसे महत्वपूर्ण बात जीवन में कुछ ऐसा होता है कि उसे दिमाग यां बुद्धि से नहीं समझा जा सकता , उसे तो स्वअनुभव से ही जाना जाता है जैसे की ईश्वर ,प्रेम ,पीढ़ा ,स्वाद,तपन आदि। रेकी भी उन्हीं में से एक है जिसे आप उपयोग करके अपने अनुभव से ही समझ सकते हैं।</u> तो आपसे निवेदन है कि आप न तो किसी से रेकी के संबघ में वाद – विवाद करें और नहीं तर्कों के माध्यम से समझाने का प्रयास ही करें। रेकी का मूल उद्देश्य बुद्धत्व को पाना है आप अपने सारी ऊर्जा उसी में लगाएं इससे आपके भीतर रुपांतरण होगा और आपका यह बदला हुआ जीवन स्वयं ही रेकी की सूचना अन्यों तक पहुंचाएगा कि इस व्यक्ति में कुछ परिवर्तन आ गया है तब आप उन्हे अपने इस परिवर्तन का रहस्य बतायें कि यह सब तो रेकी की देन है जिसे कोई भी सीख सकता है।

6.रेकी ध्यान

रेकी ध्यान चारों सिंबल के साथ एक बहुत शक्तिशाली ध्यान है जिसकी सहायता से आप जीवन के हर उस लक्ष्य को पा सकतें है जो कुदरत के नियमों के विपरीत नहीं हो एवं आपमें उसे पाने की पात्रता हो। रेकी सब जानती है कि आपकी योग्यता क्या है? आपकी वास्तविक जरुरत क्या है?आपको किस समय क्या देना है, रेकी सभी कुछ जानती है क्योंकि वह परमेश्वर की सर्वोच्च समझ से युक्त सृजनात्मक शक्ति है। वह अपने आप में सर्वोच्च बुद्धिमता से परिपूर्ण है। अतः आपके जो लक्ष्य सच्चे एवं घर्म संगत होंगे उन्हें ही वह पूरा करेगी। यदि आपके दिमाग में कोई खिचड़ी पक रही हो कि रेकी से ऐसा कर लेंगे या फिर वैसा कर लेंगे तो क्षमा कीजिए रेकी आपके लिए ऐसा कुछ भी नहीं करने वाली। आपके लक्ष्य मानवता के लिए कल्याणकारी होने चाहिये। अतः
अपने अंदर करुणा का ज्यादा से ज्यादा विकास कीजिए,रेकी के सिद्धांतो को अपने जीवन में उतारें। संपूर्ण कायनात आपका सहयोग करने के लिए तत्पर है। आइये अब घ्यान विधि को समझें :–
रेकी ध्यान :–
1.किसी आरामदायक आसन में बैठ जाएं। अपने सारे शरीर को ढीला छोड़ दें। 7 बार लंबी गहरी सांस लें और धीरे – धीरे छोड़े।
2.अब रेकी की आभार विधि करके रेकी को अपनें अंदर चैनल करें। आपके दोनों हाथ घुटनों के उपर हथेली आकाश की तरफ होनी चाहिये।
3.अब अपनी आँखे बंद कर लें । अपने सामने की ओर अपने दाहिने हाथ से बैंगनी रंग से चमकता हुआ एक बड़ा सा डाइ को मियो सिंबल बनाएं। कल्पना करें कि इस सिंबल से बैंगनी प्रकाश निकल रहा है। इस सिंबल की ऊर्जा को महसूस करें एवं इसे अपने अंदर श्रने दें। इस अवस्था में 5 मिनट तक रहें।
4.अब इसी तरह अपने दाहिने तरफ सुनहरे प्रकाश से चमकता हुआ चो कु रे बनाएं। कल्पना करें कि इस सिंबल से सुनहरा प्रकाश निकल रहा है। इस सिंबल की ऊर्जा को महसूस करें एवं इसे अपने अंदर श्रने दें। इस अवस्था में 5 मिनट तक रहें।
5.अब इसी तरह अपने पीछे की ओर सुनहरे प्रकाश से चमकता हुआ होन शा ज़े शो नेन बनाएं। कल्पना करें कि इस सिंबल से सुनहरा प्रकाश निकल रहा

है। इस सिंबल की ऊर्जा को महसूस करें एवं इसे अपने अंदर श्रने दें। इस अवस्था में 5 मिनट तक रहें।

6.अब इसी तरह अपने बांयी तरफ सुनहरे प्रकाश से चमकता हुआ से हे की बनाएं। कल्पना करें कि इस सिंबल से सुनहरा प्रकाश निकल रहा है। इस सिंबल की ऊर्जा को महसूस करें एवं इसे अपने अंदर श्रने दें। इस अवस्था में 5 मिनट तक रहें।

7.इस तरह कुल 20 मिनट तक इस ध्यान को करना है। ध्यान पूरा करने के बाद अपने आपको बैंगनी प्रकाश के अंडाकार कवच के अंदर स्वयं को देखना है।

8. अंत में आभार विधि कर घ्यान सत्र को समाप्त करें।

7.साईकिक सर्जरी

सईकिक सर्जरी यानि की काल्पनिक ऑपरेशन । इसका प्रयोग नकारात्मक ऊर्जा अवरोधों को हटाने एवं रोगी अंगो की सारी रोगग्रस्त ऊर्जा को हटाकर उसमे रेकी से निर्मित नवीन ऊर्जा की स्थापना करना है। आपको यह तो पता ही है जैसे हमारा स्थूल शरीर होता है ठीक वैसा का वैसा हमारा सूक्ष्म शरीर भी होता है जो कि ऊर्जा शरीर होता है। यह साधारण आँखो से दिखाई नहीं देता है। इसे देखने केलिए आज्ञा चक्र का जाग्रत होना अनिवार्य होता है। किन्तु इसे हम देख नहीं सकते किन्तु रेकी की सहायता से अपने हाथों को संवेदनशील बनाकर महसूस कर सकते हैं। तो साईकिक सर्जरी इसी ऊर्जा शरीर में की जाती है एवं इस ऊर्जा शरीर में उपस्थित ऊर्जा अंगो का प्रत्यारोपण रेकी से निर्मित ऊर्जा अंगो से किया जाता है। यह सब ध्यान की अवस्था मे करना होता है। रोगी की उपस्थिती में भी किया जा सकता है। किन्तु ध्यान रखना है कि आप रोगी को कुछ भी नहीं बताएगें कि आप क्या कर रहें है और न ही उसके किसी परिजन को यह बताएगें। साईकिक सर्जरी आपका गुप्त उपकरण है जिसे बाहर नहीं बताना है।

साईकिक सर्जरी की विधि :–

(अ.)अपने ऑपरेशन कक्ष का निर्माण। (ब.)रेकी अंगो के बैंक का निर्माण।

(स.)साइकिक सर्जरी

(अ.)ऑपरेशन कक्ष का निर्माण :– इसके लिए पहले रेकी ध्यान कर मन की शांत अवस्था में आ जाएं। अब अपनी कल्पना का विस्तार करें एवं अस्पताल के ऑपरेशन कक्ष की तरह ही अपने आ.कक्ष की कल्पना करें। आपरेशन कक्ष में कई औजार होते हैं आपको इन औजारों के स्थान पर आपको अपने हाथों का ही उपयोग करना होता है।

(ब.)ऑपरेशन कक्ष के निर्माण के बाद अब रेकी बैंक का निर्माण करना होगा। जहाँ से हम अपने आवश्यक रेकी से निर्मित अंग जरुरत पड़ने पर ले सकें।

(स.)साइकिक सर्जरी :–

1.रेकी आभार विधि करें। अपने हाथों पर चारो सिंबल बनाएं।

2.कल्पना करें कि रोगी आपके द्वारा निर्मित ऑपरेशन कक्ष में ऑपरेशन टेबल पर लेटा हुआ है। वह अचेत अवस्था में है। अब जिस अंगों से नकारात्मक ऊर्जा अवरोध को हटाने के लिए उस अंग को काल्पनिक रेकी चाकू से कट करे एवं इसे खोलें। इसके बाद उसमें से नकारात्मक ऊर्जा अवरोध को बाहर निकालें इस अवरोध की आपको गाड़ी काली ऊर्जा के रप में कल्पना करनी है। जब सारे अपरोध निकल आएं तो इसकी रेकी शॉवर से धुलाई करें । इसके बाद रेकी बैंक से नवीन ऊर्जा लेकर उसमें प्रत्यारोपित कर दें। अब उसकी सिलाई कर ठीक कर दें एवं रेकी से उसे पहले जैसा कर दें।

4.अंत में ऑपरेशन के सफल होने के बाद रोगी के पूर्णतया स्वस्थ शरीर के चित्र की कल्पना कर उसे स्थाई करें। इस चित्र के ऊपर पॉवर सिंबल बना दें।

8.रेकी और क्रिस्टल

रेकी के साथ क्रिस्टल का भी उपयोग किया जाता है। क्रिस्टल सूक्ष्म ऊर्जा के अच्छे ग्राहक(**Reciever**) एवं प्रक्षेपक(**Projector**) होते हैं। क्रिस्टल रेकी को कई गुणा बढ़ा देते हैं। इन क्रिस्टल की ग्रिड बनाकर हीलर की अनुपस्थिती में रोगी को रेकी करने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है। क्रिस्टल सभी तरह की ऊर्जाओं को अपने अंदर ग्रहण कर लेते हैं फिर चाहे वह नकारात्मक हो यां सकारात्मक। अतः उनका उपयोग करने से पहले उनका शुद्धिकरण आवश्यक है। इन्हें शुद्ध करने के लिए सबसे आसान तरीका है रेकी। रेकी से इन्हें शुद्ध करने की विधि :–

1. रेकी आभार विधि कर रेकी चैनल करें।
2. क्रिस्टल को बाएं हाथ में पकड़ कर उसके ऊपर तीन बार सेहेकी सिंबल बनाएं।
3. 5 मिनट तक रेकी क्रिस्टल में प्रवाहित करें और बाद में चो कु रे सिंबल बना दें।
4. पुनः रेकी आभार विधि कर सत्र का समापन करें।

प्रोग्रामिंग :–

1. क्रिस्टल की प्रोग्रामिंग के लिए रेकी आभार विधि कर रेकी को चैनल करें।
2. क्रिस्टल को उपरोक्त विधि से शुद्ध करने के बाद उसे अपने बाएं हाथ में पकड़ कर आज्ञा चक्र पर ले जाएं।
3. जिस उद्देश्य के लिए उसे प्रोग्राम करना है उसकी कल्पना आज्ञा चक्र पर करें एवं अपने दाहिने हाथ को ऊपर की तरफ उठाएं एवं मन ही मन कल्पना करें कि रेकी आपके क्राउन चक्र एवं हाथ से होती हुई आपके अंदर आ रही है अब कहें कि–

   रेकी के साथ – साथ सौभाग्य एवं ईश्वरीय कृपा भी आ रही है। रेकी कृपया करके इस क्रिस्टल को मेरे उद्देश्य की पूर्ति की शक्ति प्रदान करें (यहाँ आपको अपने उद्देश्य का स्पष्ट ज्ञान होना अनिवार्य है एवं क्रिस्टल आपके उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं इसकी जीवंत कल्पना करनी है।)। इसे तीन बार दोहराएं।

4. अब इसके ऊपर चारो सिंबल बनाकर फूंक मारें।
5. अब कहें कि आपका संकल्प इसी समय क्रियान्वित हो चुका है। इस क्रिस्टल में नकारात्मक ऊर्जा,बीमारियों एवं दुर्भाग्य को दूर करने की शक्ति आ चुकी है।
6. यह क्रिस्टल स्वास्थ्य ,समृद्धि एवं सुरक्षा देने के लिए तैयार है।
7. अब इसके ऊपर पॉवर सिंबल बनाएं।
8. रेकी आभार विधि कर सत्र को समाप्त करें।

9.एट्यूनमेंट की तैयारी

शक्तिपात करने के लिए आपको कक्ष तैयार करना होगा। शक्तिपात के लिए आपको कुछ सामग्री की आवश्यकता होगी। जिसका विवरण इस प्रकार हैः–

1.कक्ष में अच्छी जगह पर रेकी मास्टर डा.उसुई का चित्र लगाएं। अपने ईष्ट देव आदि का भी लगा सकते हैं।

2.एक 2 फीट ऊंचा लकड़ी का स्टूल विद्यार्थी के बैठने के लिए।

3.दीपक यां मोमबत्ती

4.अगरबत्ती

5.एक घंटी

6.पुष्प गुलाब के हों तो अच्छा होगा, अनिवार्य नहीं है।

कक्ष को रेकी से चार्ज करें। इसके लिए आभार विधि कर दसों दिशाओं में चारों सिंबल बना कर कक्ष रेकी से भर गया है ऐसी भावना करें।

कक्ष को सुरक्षा कवच पहनाएं। इसके द्वितीय स्तर में सिखाये गये सुरक्षा कवच से सील करें। दसों दिशाओं में चो कु रे सिंबल बनाकर चुटकी बजाएं।

इस तरह आपका कक्ष शक्तिपात आयोजन के लिए तैयार हो गया है। इस तरह कक्ष को सभी स्तर के शक्तिपात एवं उपचारक शक्तिपात के लिए आपको तैयार करना है।

10.हीलींग एट्यूनमेंट

हीलींग एट्यूनमेंट रोगियों पर किया जाता है। इससे उन्हें रेकी स्तोत्र से सीधे ही जोड़ दिया जाता है जिससे उन्हें उच्च स्तरीय रेकी का लाभ मिलता है। इसे पाने के बाद वे स्वयं को या अन्य किसी को रेकी नहीं कर सकते।

हीलींग एट्यूनमेंट की विधि

1.सबसे पहले अध्याय 9 में बताए अनुसार कक्ष को तैयार करें
2.अब आभार विधि कर रेकी ,रेकी मास्टर ,ईष्टदेव का आहवाहन् करें एवं उनसे कहें कि आप हीलींग एट्यूनमेंट कर रहे हैं इसमें वे आपका मार्गदर्शन एवं सहयोग करें।
3.अब रोगी को हाथ जोड़कर एवं आँखें बंद कर बैठने को कहें।
4.रोगी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।
5.अब रोगी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। रोगी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें।
6.अब मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा लगाते हुए रोगी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह रोगी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा। इसके बाद वॉयलेट ब्रीथ करते हुए रोगी के
क्राउन चक्र पर फूंक मारें।
7.अब रोगी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें।
8.अब क्राउन चक्र के ऊपर अपने दाहिने हाथ से डाइ को मियो सिबंल बनाना है। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार उच्चारण करना है और सिंबल को हाथ से गाइड करते हुए इसे हार्ट चक्र में स्थापित करना है।
9. अब क्राउन चक्र के ऊपर अपने दाहिने हाथ से *चो कु रे* सिबंल बनाना है। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार उच्चारण करना है और सिंबल को हाथ से गाइड करते हुए इसे हार्ट चक्र में स्थापित करना है।

10. अब क्राउन चक्र के ऊपर अपने दाहिने हाथ से *होन शा ज़े शो नेन* सिबंल बनाना है। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार उच्चारण करना है और सिंबल को हाथ से गाइड करते हुए इसे हार्ट चक्र में स्थापित करना है।
11. अब क्राउन चक्र के ऊपर अपने दाहिने हाथ से *से हे की* सिबंल बनाना है। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार उच्चारण करना है और सिंबल को हाथ से गाइड करते हुए इसे हार्ट चक्र में स्थापित करना है।
12.अब रोगी के आगे की तरफ आ जाएं और उसके हार्ट चक्र पर चारों सिंबल एक –एक कर बनाएं साथ ही उनके नाम का मंत्र की तरह उच्चारण करें।
13.अब पुनः रोगी के पीछे जाएं एवं उसके क्राउन चक्र एवं हार्ट चक्र में देखते हुए उसको मन ही मन कहें कि आपने उसे रेकी से जोड़ दिया है। अब उसे उच्च रेकी का लाभ मिलेगा। उसे उच्च रेकी मिल रही है ऐसी जीवंत मूवी देखते हुए स्थिर कर दें और चो कु रे सिंबल बना कर सील कर दें।
14. अब रोगी एवं स्वयं के बीच स्थापित हुए ऊर्जा संबध को समाप्त करने के लिए अपने एवं रोगी के बीच कराटे चाप को तीन बार चलाएं साथ ही कट–कट–कट तीन बार बोलें। इससे संबध विच्छेद हो जाएगा।
15.अंत में रोगी एवं रेकी को धन्यवाद देते हुए आभार विधि कर हीलींग एट्यूनमेंट सत्र को समाप्त करें।

11.रेकी प्रथम का एट्यूनमेंट

रेकी का शक्तिपात करने के कई तरीके हैं। इनमें सबसे ज्यादा प्रचलित नॉन ट्रेडिशनल एवं उसुई सिस्टम की पद्धति है। आपको दोनों तरह की पद्धतियों का ज्ञान दिया जा रहा है। दोनों में अंतर ये है कि नॉन ट्रेडिशनल में 7 सिंबल का उपयोग मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा के साथ किया जाता है एवं उसुई पद्धती में केवल चार सिंबल ही उपयोग किये जाते हैं एवं मूलबंध और खेचरी मुद्रा का उपयोग नहीं किया जाता। दोनों ही पद्धतियां प्रभावी हैं और कारगर हैं। जो आपको सहज लगे उसका उपयोग अपने विवेक से करें। लेकिन एक बात जरुर है यदि आप अपना आध्यात्मिक विकास करना चाहें तो मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा का जितना हो सके ज्यादा अभ्यास करें क्योंकि ये दोनों ही आत्मिक विकास की मूल कुंजियां हैं। उसुई पद्धती हो यां नॉन ट्रेडिशनल दोनों के लिए एट्यूनमेंट की तैयारी एक समान है जिसकी जानकारी आपको अध्याय 9 मे दे दी गई है। अब एट्यनमेंट की पद्धती को समझों।

नॉन ट्रेडिशनल पद्धतियां

रेकी प्रथम स्तर(REIKI FIRST LEVEL)

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें।

2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।

3.पुनः रेकी आभार विधि कर कक्ष को तैयार करें।

4.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके हाथों को नमस्कार मुद्रा में हार्ट चक्र के पास रखते हुए बैठने को कहें। उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।

5.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।

6.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे। उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी प्रथम स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।

7.अब मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा लगाते हुए विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा। इसके बाद वॉयलेट ब्रीथ करते हुए विद्यार्थी के क्राउन चक्र पर फूंक मारें।

8.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें। अब उसके क्राउन चक्र से मूलाधार चक्र तक फायर सर्पेंट सिंबल बनाएं। इसके बाद मूलाधार चक्र पर चो कु रे सिंबल बनाएं। फिर से उसके क्राउन चक्र से मूलाधार चक्र तक फायर सर्पेंट सिंबल बनाएं।

9.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर तिब्बतियन डाइ को मियो,उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन,और से हे की सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

10.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

11.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

13.अब विद्यार्थी के दोनो हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं । सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

14.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को ऐसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो।अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

15.अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

16.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें। प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

17.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें।अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके हृदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके हृदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer.**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐसा करते हुए उसके हृदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

18.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं

विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

19.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

12. रेकी द्वितीय का एट्यूनमेंट

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें।
2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।
3.पुनः रेकी आभार विधि कर कक्ष को तैयार करें।
4.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके
हाथों को नमस्कार मुद्रा में हार्ट चक्र के पास रखते हुए बैठने को कहें।
उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।
5.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।
6.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी द्वितीय स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।
7.अब मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा लगाते हुए विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा। इसके बाद वॉयलेट ब्रीथ करते हुए विद्यार्थी के क्राउन चक्र पर फूंक मारें।
8.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें। अब उसके क्राउन चक्र से मूलाधार चक्र तक फायर सर्पेंट सिंबल बनाएं।

इसके बाद मूलाधार चक्र पर चो कु रे सिंबल बनाएं। फिर से उसके क्राउन चक्र से मूलाधार चक्र तक फायर सर्पेंट सिंबल बनाएं।

9.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर तिब्बतियन डाइ को मियो,उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन,और से हे की सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

10.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन,से हे की सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें। उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

11.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

13.अब विद्यार्थी के दोनो हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर एक –एक करके चो कु रे ,होन शा ज़े शो नेन ,से हे की सिंबल बनाएं । सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

14.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को ऐसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो।अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

15. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

16.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें। प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

17.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें।अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके हृदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके हृदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer.**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐसा करते हुए उसके हृदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

18.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं
विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

19.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

13. रेकी तृतीय का एट्यूनमेंट

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें।

2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।

3.पुनः रेकी आभार विधि कर कक्ष को तैयार करें।

4.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके हाथों को नमस्कार मुद्रा में हार्ट चक्र के पास रखते हुए बैठने को कहें। उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।

5.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।

6.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी तृतीय(मास्टर लेवल) स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।

7.अब मूलबंध एवं खेचरी मुद्रा लगाते हुए विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा। इसके बाद वॉयलेट ब्रीथ करते हुए विद्यार्थी के क्राउन चक्र पर फूंक मारें।

8.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें। अब उसके क्राउन चक्र से मूलाधार चक्र तक फायर सर्पेंट सिंबल बनाएं। इसके बाद मूलाधार चक्र पर चो कु रे सिंबल बनाएं। फिर से उसके क्राउन चक्र से मूलाधार चक्र तक फायर सर्पेंट सिंबल बनाएं।

9.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर तिब्बतियन डाइ को मियो,उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन,और से हे की सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

10.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर फायर सर्पेंट,तिब्बतियन डाइ को मियो,उसुई मस्टर सिंबल,राकू चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन,से हे की सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

11.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

13.अब विद्यार्थी के दोनो हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर फायर सर्पेंट,तिब्बतियन डाइ को मियो,उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन, से हे की और राकू सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

14.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को ऐसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो। अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर फायर सर्पेंट, तिब्बतियन डाइ को मियो,उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन, से हे की और राकू सिंबल बनायें,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

15. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

16.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें। प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

17.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें। अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके हृदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके हृदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं एवं अब आप सफल रेकी शिक्षक हैं।**(Now you are confident and successful Reiki healer and Teacher(Master).** तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐसा करते हुए उसके हृदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

18.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं
विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

19.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

उसुई पद्धती से शक्तिपात

1.उसुई पद्धती और नॉन ट्रेडिशनल पद्धती सिर्फ इतना अंतर है कि नॉन ट्रेडिशनल में शक्तिपात करते समय मूलबंध,खेचरी मुद्रा,वायलेट ब्रीथ का प्रयोग किया जाता है उसुई पद्धती में नहीं।

2.नॉन ट्रेडिशनल में सात सिंबल तिब्बतियन डाइ को मियो,उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन, से हे की और राकू का प्रयोग किया जाता है और उसुई पद्धती में सिर्फ चार सिंबल डाइ को मियो,चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन और से हे की का ही प्रयोग किया जाता है।

3.उसुई पद्धती में वॉयलेट ब्रीथ के स्थान पर साधारण फूंक का ही प्रयोग किया जाता है।

शेष सारा का सारा तरीका एक समान होता है। दोनों ही शक्तिपात के तरीके सही एवं कारगर हैं। नॉन ट्रेडिशनल में समय ज्यादा लगता है बनिस्पत उसुई पद्धती के। बहुत से शिक्षक पैरों के एट्यूनमेंट का दावा भी करते हैं उसमें विशेश कुछ भी नहीं है। यदि आप भी करना चाहें तो इसके लिए शक्तिपात विधि में हाथों को एट्यून करने के बाद विद्यार्थी के दोनों पैरों के तलवों पर चो कु रे सिंबल बनाकर तीन बार टेप कर दें।

उसुई पद्धती से प्रथम स्तर शक्तिपात
भाग–1

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें एवं कक्ष को तैयार करें।
2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।
4.पुनः रेकी आभार विधि कर कक्ष को तैयार करें।
5.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके
हाथों को नमस्कार मुद्रा में हार्ट चक्र के पास रखते हुए बैठने को कहें।
उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।
5.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।
6.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी प्रथम स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।
7.अब विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा।
8.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें।

9.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

10.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

11.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

13.अब विद्यार्थी के दोनो हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं । सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

14.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को ऐसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो। अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

15. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

16.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें।

प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

17.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें। अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके ह्रदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके ह्रदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer.**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐसा करते हुए उसके ह्रदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

18.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं
विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

19.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

भाग–2

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें एवं कक्ष को तैयार करें।

2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।

3.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके हाथों को नमस्कार मुद्रा में हार्ट चक्र के पास रखते हुए बैठने को कहें। उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।

4.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।

5.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी प्रथम स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।

6.अब विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा।

7.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें।

8.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे और होन शा ज़े शो नेन सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार मन ही मन

उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

9.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

10.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

11.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के आज्ञा चक्र पर होन शा ज़े शो नेन सिंबल बनाएं। उसके दोनों हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं। सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

13.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को ऐसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो।अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

14. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

15.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें। प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

16.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें।अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके हृदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके हृदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer.**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐस करते हुए उसके हृदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

17.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

18.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

भाग–3

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें एवं कक्ष को तैयार करें।

2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।

3.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके हाथों को नमस्कार मुद्रा में सीने के पास रखते हुए बैठने को कहें।
उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।

4.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।

5.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी प्रथम स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।

6.अब विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा।

7.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें।

8.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे और होन शा ज़े शो नेन सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन बार मन ही मन

उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

9.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

10.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

11.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के आज्ञा चक्र पर होन शा ज़े शो नेन सिंबल बनाएं ।उसके दोनों हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं । सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

13.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को एसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो।अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

14. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

15.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें। प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

16.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें।अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके ह्रदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके ह्रदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer.**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐस करते हुए उसके ह्रदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

17.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

18.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

भाग–4

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें एवं कक्ष को तैयार करें।

2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।

3.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके हाथों को नमस्कार मुद्रा में सीने के पास रखते हुए बैठने को कहें। उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।

4.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।

5.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी प्रथम स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।

6.अब विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा।

7.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें।

8.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे , होन शा ज़े शो नेन और से हे की सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन

बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

9.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

10.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

11.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के आज्ञा चक्र पर होन शा ज़े शो नेन एवं से हे की सिंबल बनाएं ।उसके दोनों हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर चोकुरे सिंबल बनाएं । सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

13.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को एसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो।अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर चो कु रे सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

14. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

15.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें। प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

16.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें।अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके हृदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके हृदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer.**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐस करते हुए उसके हृदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

17.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

18.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

उसुई पद्धती से द्वितीय स्तर शक्तिपात

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें एवं कक्ष को तैयार करें।

2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।

3.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके हाथों को नमस्कार मुद्रा में सीने के पास रखते हुए बैठने को कहें। उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।

4.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।

5.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी द्वितीय स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।

6.अब विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा।

7.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें।

8.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे , होन शा ज़े शो नेन और से हे की सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन

बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

9.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन एवं से हे की सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

10.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

11.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर चोकुरे होन शा ज़े शो नेन एवं से हे की सिंबल बनाएं । सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

13.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को एसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो।अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर चो कु रे, होन शा ज़े शो नेन एवं से हे की सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

14. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

15.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें।

प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

16.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें।अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके हृदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके हृदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer.**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐसा करते हुए उसके हृदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

17.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

18.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

उसुई पद्धती से तृतीय स्तर शक्तिपात

1.सबसे पहले आभार विधिकर रेकी को अपने अंदर चैनल करें एवं कक्ष को तैयार करें।

2.अब इसे दोहराएं :–हे! ईश्वर,रेकी,सद्‌गुरुओं,माता–पिता,दिव्य आत्माओं,पंच तत्वों,शिव–शिवा,धरती माँ,हायर सेल्फ एवं संपूर्ण अस्तित्व की सकारात्मक ऊर्जाओं मैं आपका आहवाहन् करता हुं। कृपया आप यहाँ आएं मैं यहाँ रेकी शक्तिपात करने जा रहा हुं इसमें मेरी सहायता करें इसे सफल बनाएं। यह शक्तिपात इस विद्यार्थी एवं संपूर्ण मानवता के सर्वोच्च कल्याण के लिए ही हो इसका कोई भी अनुचित अथवा अधार्मिक उपयोग न कर सके।

3.विद्यार्थी को अंदर कक्ष में बुलाएं एवं उसे स्टूल पर आँखे बंद करके
हाथों को नमस्कार मुद्रा में हार्ट चक्र के पास रखते हुए बैठने को कहें।
उसे यह भी बता दें कि शक्तिपात के दौरान आप उसके हाथों को सिर के ऊपर ले जाएगें तो उस समय हाथों को ढीला छोड़ दें।

4.विद्यार्थी के सामने खड़े होकर तीन बार घंटी बजाएं एवं उसके आज्ञा चक्र पर एकटक देखते हुए मन ही मन तीन बार चो कु रे–चो कु रे दोहराएं।

5.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को अपनें दोनों हाथों से ढक दें। मन ही मन मौन प्रार्थना करें। विद्यार्थी के अच्छे के लिए दुआ मांगे।उसके ईष्ट देव एवं उसके अवचेतन मन से सहयोग का निवेदन करें। अब संकल्प ले कि आप रेकी तृतीय(मास्टर लेवल) स्तर का शक्तिपात कर रहे हैं।

6.अब विद्यार्थी के पीछे की तरफ जाकर रेकी को अपने अंदर चैनल करते हुए उसके क्राउन चक्र पर दोनों हाथों को रख कर रेकी को प्रवाहित होने दें। इस तरह विद्यार्थी और आपमें ऊर्जा संबध स्थापित हो जाएगा।

7.अब विद्यार्थी के ऑरा को खोलें। ऑरा को खोलने के बाद उसके क्राउन चक्र को खोलें। खोलने का मतलब सिर्फ भावनाकरनी है। इसके बाद हार्ट चक्र को खोलें।

8.अब उसके क्राउन चक्र के ऊपर उसुई मास्टर सिंबल,चो कु रे , होन शा ज़े शो नेन और से हे की सिंबल बनायें। सिंबल बनाते समय उसके नाम का तीन

बार मन ही मन उच्चारण करना है एवं फूंक मारनी है साथ ही संकल्प करना है कि सिंबल विद्यार्थी के मस्तिष्क के केंद्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

9.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को उसके सिर के ऊपर ले आएं एवं उसके हाथों के ऊपर डाइ को मियो, चो कु रे,होन शा ज़े शो नेन एवं से हे की सिंबल बनाए,उसके नाम का तीन बार जाप करें,फूंक मारें और अपने दाहिने हाथ से उसके हाथों की उंगलियों पर धीरे से तीन बार टेप(थपथपाएं) करें।उसके बाद हाथों को पहले वाली स्थिति में ले आएं।

10.अब उसके दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से ढकते हुए कानों में रेकी को प्रवाहित होने दें साथ ही साथ सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

11.अब विद्यार्थी के बगल में आकर अपने दोनो हाथों को उसके सिर के ऊपर इस तरह रखें कि बायां हाथ उसके सिर के पिछले भाग को एवं दाहिना हाथ उसके ललाट को स्पर्श करे। हल्का सा दबाव देते हुए रेकी को प्रवाहित होनें दे एवं सभी सिंबल के नामों का तीन –तीन बार जाप करें।

12.अब विद्यार्थी के दोनों हाथों को आज्ञा चक्र के पास ले जाएं एवं अपने बाएं हाथ से उसके दोनों हाथों को पकड़कर उसके ऊपर डाइ को मियो, चोकुरे होन शा ज़े शो नेन एवं से हे की सिंबल बनाएं । सिंबल बनाने के बाद टेप करें एवं फूंक मारें। ऐसा करते हुए यह संकल्प करें कि सिंबल विद्यार्थी के हाथों से होते हुए उसके आज्ञा चक्र में जाकर स्थायी हो गए हैं।

13.अब विद्यार्थी के आगे आ जाए उसके दोनो हाथों को एसे खोलें जैसे किताब खुली हुई हो।अब उसके इन खुले हाथों के ऊपर डाइ को मियो, चो कु रे, होन शा ज़े शो नेन एवं से हे की सिंबल बनाएं,तीन बार नाम का उच्चारण करते हुए उसके दोनों हाथों को धीरे से थपथपाएं।

14. अब उसके हाथों को पिछली स्थिति में पुनः ले जाएं। अब उसके सोलर प्लेक्स चक्र से आज्ञा चक्र पर फूंक मारनी है। फूंक सोलर प्लेक्स चक्र से आरंभ कर थ्रोट,हार्ट ,आज्ञा चक्र होते हुए पुनः वापस सोलर तक ले जानी है।

15.अब विद्यार्थी के हाथों को खोल दें। उसका बायां हाथ उसके हार्ट चक्र पर एवं दाहिना हाथ बाएं हाथ के उपर रखें। उसके दोनो हाथों के ऊपर दाहिना हाथ रखकर रेकी को प्रवाहित होने दें उसके मंगल के लिए मौन प्रार्थना करें।

प्रार्थना करते डाइ को मियो मंत्र का जाप करें। प्रार्थना करने के बाद पुनः विद्यार्थी के पीछे जाएं।

16.अब अपने दोनो हाथों को विद्यार्थी के कंधों पर रखें।अपनी दृष्टि को उसके क्राउन चक्र पर जमाएं एवं कल्पना करें कि आप उसके ह्रदय में देख रहे हैं। कल्पना करें कि उसके ह्रदय में एक कक्ष है। उस कक्ष में रेकी के सभी सिंबल का मानस दर्शन करते हुए यह भाव करें कि रेकी शक्तिपात उसके अंदर स्थायी हो गया है। अब उसके अवचेतन मन को मन ही मन यह सूचना दें कि अब आप एक सफल रेकी उपचारक बन गए हैं आप सीधे रेकी स्तोत्र से जुड़ गए हैं एवं अब आप सफल रेकी शिक्षक(मास्टर)हैं।(**Now you are confident and successful Reiki healer and Reiki master .**) तीन बार ऐसा कहें। अब आप अपना एवं अन्यों का स्पर्श करके रेकी उपचार कर सकते हैं। ऐसी भावनाकरते हुए उससे मन ही कहें कि अब आप इस शक्तिपात को दिव्य प्रेम एवं दिव्य ज्ञान से हमेंशा के लिए सील कर रहे है। ऐसा करते हुए उसके ह्रदय में कक्ष के द्वार को बंद कर दें एवं द्वार के बाहरी भाग पर चो कु रे सिंबल बना हुआ है ऐसा भाव करें।

17.अब उसकी ऑरा को बंद करके आगे की तरफ आएं । अपने एवं विद्यार्थी के मध्य तीन बार कराटे चाप चलाते हुए कट – कट बोलते ऊर्जा संबध का विच्छेद कर दें।

18.अब आभार विधि कर सभी को धन्यवाद दें। विद्यार्थी को शक्तिपात की पूर्णता की सूचना देते हुए उसे रेकी चैनल बनने पर बधाई दें। इसके बाद उससे कहें कि मौन रहते हुए 5–10 मिनट तक आँखे बंद करके बैठा रहे एवं रेकी शक्तिपात के दौरान मिली शान्ति का आनंद ले। अंत में पुनः आभार करते हुए सत्र का समापन करें।

स्वयं पर शक्तिपात

आप स्वयं पर भी शक्तिपात कर सकते हैं। यह रेकी का सबसे बड़ा वरदान है। मैं आपको कहना चाहूंगा कि हररोज आप अपने ऊपर शक्तिपात करें। इसकी विधि कोई मुश्किल नहीं है। बस आपको इतना करना है कि आप पहले रेकी ध्यान करलें उसके बाद ध्यानावस्था में स्वयं के रेकी शक्तिपात का मानसदर्शन इस संकल्प से करें आप स्वयं के ऊपर ही शक्तिपात कर रहे हैं।

14. रेकी कक्षा कैसे लें ?

रेकी कक्षा लेने के लिए इस प्रकार तैयारी करें :–

1.रजिस्ट्रेशन फार्म भरवाएं एवं उन्हे स्पश्ट बता दें कि रेकी से आप कोई चिकित्सक नहीं बन जाएगें कि इसके आधार पर आप चिकित्सकों की तरह जांच एवं दवाईयां देने लगें। रेकी एवं आपका संस्थान ऐसी किसी भी तरह की अनुमति आपको नहीं देता है।

2. रेकी क्या है? रेकी के सिद्धांत।

3.आप ने रेकी कैसे सीखी?

4.ऑरा एवं चक्रों के बारे में।

5.रेकी के अनुसार रोगों के कारण।

6.शक्तिपात के बारें में बताएं।

7.रेकी हैंड पॉजीशन के बारे में बताएं।

8.रेकी की आभार विधि

9.स्केनिंग

10.ऑरा क्लीनजिंग

11.सुरक्षा कवच

12.रेकी के अन्य प्रयोगों के बारे में।

13.रेकी के आगे के स्तरों की चर्चा करें।

14.रेकी प्रमाण पत्र दें।

15.आभार एवं घन्यवाद देकर विदा करें।

15.शुक्रिया

आप को बहुत–बहुत शुक्रिया। अब आप पूर्ण रेकी शिक्षक बन गए हैं।इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। मंगल कामना करता हुँ बुद्धों के इस दिव्य मार्ग पर चलकर अपने परम् लक्ष्य को पायें। सत्य,करुणा,प्रेम,सहनशीलता एवं विवेक के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है। ये पाँच गुण हैं जिन्हें हर रेकी शिक्षक को अपने अंदर विकसित करने होंगे।यही आपको आत्मसाक्षात्कार की तरफ ले जाएंगे। डा. उसुई अपने हर एक शिष्य से बार–बार यही कहते थे कि हर क्षण अपने मन की निगरानी करो,अपने अंदर उठने वाले हर विचार को देखो।विचार को कर्म में परिवर्तित होने से पहले देख लो समझ लो कि कहीं वो अधर्म तो नहीं है। अब तुम शिक्षक हो गए हो यह ठीक है लेकिन कभी भी स्वयं को पूर्ण मत समझ लेना। जीवन की अंतिम सांस तक अपने को विद्यार्थी ही समझना। लोग तुम्हें गुरुजी कहगें,तुम्हारा यशगान होगा बस उसे एक कान से सुनना और दूसरे कान से निकाल लेना। उसे पकड़ना नहीं
वरना अहम् आ गया तो सबकुछ क्षण भर में गवां बैठोगे।हाँ यह सही है कि अब तुम्हारी अवन्नति नहीं होगी लेकिन यात्रा लंबी होती जाएगी और यह यात्रा सुखदाई होगी की कष्टमयी यह तुम्हारे कर्म निश्चित करेगें।कर्मों के लिखे को बदलने का कोई मार्ग नहीं है उसे तो सिर्फ और सिर्फ शेगना ही होगा इसमें ईश्वर भी तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता। सावधानी,होश,सजगता ही एकमात्र मार्ग है। सड़कों पर लिखा तो होता है कि **सावधानी हटी दुर्घटना घटी** यह सिर्फ गाड़ी चलाते समय के लिए नहीं है। जीवन में पग–पग पर इसे याद रखना होगा।

प्रेम
सत्य
विवेक
करुणा
सहनशीलता
सावधानी
सुजागी
ध्यान
होश
आप सभी का शुक्रिया।

Element	Yin Organ	Yang Organ	Body Tissue	Finger	Sense	Emotion	Direction
Wood	Liver	Gallbladder	Tendons	Index	Sight Eyes	Anger	East
Fire	Heart	Small Intestine	Blood Vessels	Middle	Taste Tounge	Depression Anxiety Excitability	South
Earth	Spleen	Stomach	Muscles	Thumb	Speech Mouth	Worry	Central Middle
Metal	Lung	Large Intestine	Skin	Ring	Smell Nose	Sadness Grief	West
Water	Kidney	Urinary Bladder	Bones	Baby	Hearing Ears	Fear	North

तत्व	यिन अंग	यांग अंग	शरीर के ऊतक	अंगुली	संवेदना	भाव	दिशा
लकड़ी	यकृत	पित्ताशय	टेंडन	तर्जनी	दृष्टि आँख	क्रोध	पूर्व
अग्नि	हृदय	छोटी आँत	रक्त वाहीनियां	मध्यमा	स्वाद जीभ	तनाव,चिन्ता उत्तेजना	दक्षिण
पृथ्वी	तिल्ली	अमाशय	मांसपेशियां	अंगुठा	बोली,भाशा मुख	चिन्ता	मध्य
धातु	फेंफड़े	बड़ी आँत	त्वचा	अनामिका	गंध नाक	दुःख पीड़ा	पश्चिम
जल	गुर्दे	मूत्राशय	अस्थियाँ	कनिष्ठा	सुनना कान	भय	उत्तर